IOSR Journal of Research & Method in Education (IOSR-JRME)
e-ISSN: 2320–7388, p- ISSN: 2320-737x Volume 12, Issue 6 Ser. I (Nov. – Dec. 2022), 72-76
www.iosrjournals.org

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि (साहित्य-काव्य, गद्य, पद्य)

डॉ० निर्मला सिंह
(एसोसिएट प्रोफेसर)
मर्यादा पुरुषोत्तम महाविद्यालय
रतनपुरा, मऊ
(उत्तर-प्रदेश)

सारांश
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का हिंदी निबंध और आलोचनात्मक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। वे उच्च कोटि के निबंधकार और सफल आलोचक हैं। उन्होंने सूर, कबीर, तुलसी आदि पर जो विद्वत्तापूर्ण आलोचनाएं लिखी हैं वे हिंदी में पहले नहीं लिखी गईं। उनका निबंध-साहित्य हिंदी की स्थाई निधि है। उनकी समस्त कृतियों पर उनके गहन विचारों और मौलिक चिंतन की छाप है। विश्व-भारती आदि के द्वारा द्विवेदी जी ने संपादन के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है। डॉ- हजारीप्रसाद द्विवेदी भावयित्री और कारयित्री प्रतिभा से सम्पन्न कलाकार थे- एक ही व्यक्ति में इन दोनों प्रतिभाओं के दर्शन विरल होते है- या तो कोई व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता होता है- या फिर साहित्य का रचयिता, किन्तु दोनों गुण जिस व्यक्ति में विद्यमान होते है, वही श्रेष्ठ साहित्यकार माना जाता है, सौभाग्य से डॉ- हजारीप्रसाद द्विवेदी को ये दोनों प्राप्त हुए।
मुख्यशब्द: *आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आलोचना दृष्टि, साहित्य-काव्य, गद्य,पद्य, मौलिक चिंतन, भावयित्री और कारयित्री प्रतिभा*

प्रस्तावना

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक निबंधकार उपन्यासकार एवं आलोचक थे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को उनकी रचनाओं के लिए पदम भूषण से भी सम्मानित किया गया था उन्होंने अपने सकारात्मक लेखों से एक अलग पहचान बना ली थी. उनके निबंध कहानी ललित निबंध यह सब पाठ्य पुस्तकों में भी पढ़ने को मिलती है प्रसाद द्विवेदी जी शिक्षण कार्य से ही जुड़े रह गए थे द्विवेदी जी को कविता लिखने का कला बाल्यकाल से ही था इसीलिए उन्होंने श्री ब्योमकेश शास्त्री से कला की पढ़ाई की थी.

भक्ति काल के कवियों के बारे में उनकी रचनाओं के बारे में उनकी जीवन के बारे में हजारी प्रसाद द्विवेदी को बहुत ही अच्छे से ज्ञान था तो आइए नीचे हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के जीवनी के बारे में उनका जन्म कब और कहां हुआ उन्होंने शिक्षा कहां से प्राप्त की थी उनकी प्रसिद्ध रचनाएं कौन कौन हैं विस्तार से जानते हैं. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एक बहुत ही प्रसिद्ध निबंधकार उपन्यासकार समीक्षक और आलोचक थे .उनके उत्कृष्ट लेखनी के लिए ही पदम विभूषण से सम्मानित किया गया था आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हिंदी , अंग्रेजी, संस्कृत और बांग्ला भाषा के ज्ञानी थे उनकी रचनाएं उच्च कोटि के होते थे, उनकी रचनाओं में सरसता, गंभीरता, विद्वता आदि होते थे हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का स्वभाव बहुत ही सरल और उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था उन्होंने हिंदी साहित्य के महान कवियों सूरदास कबीरदास तुलसीदास आदि पर आलोचनाएं लिखी हैं.आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संस्कृत से इंटर की पढ़ाई पूरी की थी. ज्योतिष और साहित्य से शिक्षा हिंदू विश्वविद्यालय से उन्होंने प्राप्त किया था इसीलिए आचार्य की उपाधि उन्हें प्राप्त हुआ था उनका परिवार ज्योतिष विद्या के लिए हर जगह लोकप्रिय था उनके पिता भी एक बहुत बड़े प्रकांड पंडित थे.

इसीलिए द्विवेदी जी ने भी ज्योतिष और साहित्य का पढ़ाई किया था वैसे तो आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को बांग्ला हिंदी अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान था लेकिन उन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाएं ज्यादातर हिंदी भाषा में ही की थी उन्हें आलोक पर्व नाम की रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था.

हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 को हुआ था द्विवेदी जी बलिया जिला के आरत दुबे का छपरा गांव के रहने वाले थे वह एक सरयूपारीण ब्राम्हण कुल के थे. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के पिता का नाम पंडित

अनमोल द्विवेदी था उनकी माता का नाम ज्योतिष्मती देवी था. उनके पिताजी संस्कृत के बहुत बड़े पंडित थे द्विवेदी जी के माता भी एक प्रसिद्ध पंडित कुल की थी.आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी रखा गया था लेकिन बाद में उन्होंने अपना नाम बदलकर हजारी प्रसाद द्विवेदी रख लिया था.

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का शिक्षा शुरुआत में गांव से ही हुआ था 1920 में हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने गांव के नजदीकी ही बसरिकापूर से मिडिल स्कूल की पढ़ाई में फर्स्ट डिवीजन से पास हुए. उसके बाद उनके नजदीक में ही एक गांव था जहां पर संस्कृत का पढ़ाई होता था एक पाराशर ब्रह्मचर्य आश्रम में उन्होंने संस्कृत का पढ़ाई शुरू किया वहां पर कुछ दिनों पढ़ने के बाद 1923 में आगे की पढ़ाई के लिए बनारस चले गए बनारस जाने के बाद रणवीर संस्कृत पाठशाला कामाख्या से उन्होंने एंट्रेंस एग्जाम देकर फर्स्ट डिवीजन में पास करके काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उनका एडमिशन हुआ 1927 में मैट्रिक उन्होंने अच्छे नंबरों से पास किया. उन्हें 1929 में ज्योतिष शास्त्र से पढ़ाई पूरी करके आचार्य की उपाधि उन्हें मिल गया शास्त्रीय और आचार्य में दोनों की पढ़ाई उन्होंने पूरी की और दोनों में फर्स्ट डिवीजन से पास करके आचार्य कहलाने लगे.

उसके बाद उन्होंने वाराणसी से काशी हिंदू विश्वविद्यालय से शास्त्रीय की पढ़ाई पूरी की और उन्होंने आचार्य की उपाधि प्राप्त की. द्विवेदी जी हिंदी भाषा के अलावा अंग्रेजी संस्कृत, पाली, बंगाली, पंजाबी, गुजराती आदि भाषाओं के बहुत बड़े विद्वान थे. शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने शांतिनिकेतन में हिंदी के अध्यापक के पद पर नौकरी किया उसके बाद उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर कार्य किया उसके बाद उन्होंने कई विश्वविद्यालयों में प्रोफ़ेसर पद पर काम किया. जब काशी हिंदू विश्वविद्यालय से वह हाई स्कूल की पढ़ाई कर रहे थे उसी दौरान हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का विवाह 20 वर्ष की उम्र में भगवती देवी से हो गया.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक जीवन

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने बहुत ही उच्च कोटि की रचनाएं की है उनकी रचनाओं में निबंध, उपन्यास, आलोचना, कहानी इत्यादि है कई पत्रिकाओं में भी उन्होंने संपादन किया था उनकी रचनाओं में सरसता गंभीरता विद्वता प्रत्यक्ष दिखाई देता था. उनकी ललित निबंध भी है जिनमें भारतीय संस्कृति के बारे में दर्शाया गया है द्विवेदी जी अपनी पढ़ाई पूरा करके जो शांतिनिकेतन में शिक्षक के पद पर थे तभी उन्होंने रविंद्र नाथ ठाकुर तथा आचार्य क्षितिज मोहन सेन के बारे में अध्ययन किया और उसी के बाद उन्होंने अपनी रचनाएं लिखनी शुरू कर दी.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान थे उन्हें संस्कृत अपने परिवार से ही प्राप्त हुआ था उनके पिताजी संस्कृत के प्रकांड पंडित थे इसीलिए उन्हें भी संस्कृत का बहुत अच्छे से ज्ञान था. उन्होंने भारतीय हिंदी साहित्य में निबंध और आलोचना के क्षेत्र में अपना स्थान बहुत ऊंचे पद पर कर लिया था उन्हें एक उच्च कोटि के निबंधकार और सफल आलोचक माना जाता है

हजारी प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व

भारतीय हिंदी साहित्य में एक श्रेष्ठ निबंधकार उपन्यासकार आलोचक एक संस्कृत के प्रकांड पंडित आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी थे जिन्हें हिंदी संस्कृत भाषाओं का बहुत ज्ञान था उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था. जो भी व्यक्ति एक बार द्विवेदी जी से मिलता था तो उनसे बहुत प्रभावित हो जाता था हजारी प्रसाद द्विवेदी का स्वभाव बहुत ही सरल और उदार था किसी भी व्यक्ति से बड़े ही आदर सम्मान से मिलते थे किसी से भी मिलने के बाद उस व्यक्ति पर अपना छाप छोड़ जाते थे. वह एक संस्कृत के प्रकांड पंडित थे संस्कृत से इंटर किए थे इसीलिए उन्हें आचार्य की उपाधि मिली थी उनके अनमोल रचनाओं के लिए कई पुरस्कार भी मिले साहित्य अकादमी पुरस्कार पद्म भूषण उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी का अध्यक्ष भी उन्हें चुना गया था.

1972 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान उपाध्यक्ष पद के भी रहे. लेखन शास्त्रीय और ज्योतिष यह सारी ज्ञान तो उन्हें विरासत में अपने परिवार से ही मिला था यह तो उनके खून में ही था क्योंकि उनके पिताजी भी संस्कृत के बहुत बड़े प्रकांड पंडित थे. हजारी प्रसाद द्विवेदी कि जो भी रचनाएं हैं वह अधिकतर हिंदी साहित्य पर ही लिखा गया है. उन्होंने कई उपन्यास और निबंध लिखे हैं जो की बहुत ही प्रचलित हुए हैं बचपन से ही कविता लिखने की कला उन्हें आती थी.

इसीलिए श्री ब्योमकेश शास्त्री से उन्हें लिखने की काला का भी पढ़ाई करवाया गया था हजारी प्रसाद द्विवेदी जी 8 नवंबर 1930 में जो शांति निकेतन गए थे वहां पर उनका मुलाकात रविंद्र नाथ टैगोर से हुआ. रवींद्रनाथ टैगोर के बातों से उनके स्वभाव से द्विवेदी जी बहुत प्रभावित हुए बहुत खुश हुए और वहीं पर रविंद्र नाथ टैगोर ने उन्हें एक टीचर के रूप में शांतिनिकेतन में अपने सहयोगी के रुप में रख लिया. और द्विवेदी जी शांतिनिकेतन में सेवा भाव करने लगे द्विवेदी जी का

हाव-भाव बोलचाल उनका आचरण बहुत ही मनमोहक था वह बहुत ही सरल और सुलझे हुए व्यक्ति थे उनकी बातों से उनके विचार से कोई भी प्रभावित हो जाता था.

1973 में उन्हें अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया यह सम्मान उन्हें महान निबंध संग्रह लिखने के लिए दिया गया था द्विवेदी जी भक्ति काल के कवियों के बारे में या भक्ति काल के साहित्य के बारे में बहुत अच्छे से अध्ययन किए थे. इसीलिए उन्हें हिंदी साहित्य की ज्यादा ज्ञान था हिंदी संस्कृत के तो प्रकांड पंडित थे लेकिन जब वह शांतिनिकेतन में रविंद्र नाथ टैगोर के साथ शिक्षक के रूप में रहने लगे तो वहां पर उन्हें उन्होंने बांग्ला भाषा का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया और बांग्ला में भी कई लेख लिखे थे.

हजारी प्रसाद द्विवेदी की भाषा शैली

हर लेखक कवि साहित्यकार निबंधकार की लिखने की एक अपनी भाषा शैली होती है वह जो भी रचना करते हैं जो भी लेख कविता निबंध नाटक उपन्यास लिखते हैं उसमें उनका एक भाषा शैली प्रधान होता है उसी के अनुरूप वह अपना रचना करते हैं तो हजारी प्रसाद द्विवेदी जी जो भी रचनाएं करते थे उनमें भाषा शैली एक बहुत ही सरल और मनमोहक रहता था इनकी जो भी रचनाएं होती थी उसे लोग बहुत पसंद करते हैं उसको और ज्यादा पढ़ने का मन करता है लोग पढ़ने लगते हैं तो छोड़ने का इच्छा नहीं करता हैं उन्होंने कई भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया था हिंदी संस्कृत बांग्ला और अंग्रेजी भाषा का भी उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और अंग्रेजी में भी कई लेख लिखे हैं हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की रचनाओं में कई कवियों के बारे में आलोचना पढ़ने को मिलता है उन्होंने जो रोज बोली जाने वाली भाषा है जो हमेशा भाषा इस्तेमाल किया जाता है

शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली उसी का उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रयोग किया है.आलोक पर्व नाम का निबंध जो कि बहुत ही प्रसिद्ध हुआ उसके लिए हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की रचनाओं की भाषा बहुत ही प्रभाव पूर्ण उसमें वाक्य लंबे लंबे होते थे और छोटी-छोटी रचनाएं भी जब पढ़ा जाता था तो ऐसा लगता था कि कोई काव्य पढ़ा जा रहा है

द्विवेदी जी ने अपनी रचनाओं में हास्य व्यंग मुहावरे कहावतें आदि का प्रयोग करके अपनी रचनाओं का मोल और बढ़ा देते थे उनकी रचनाओं में गद्य शैली का भी झलक मिलता है विवेचनात्मक शैली भी उनकी रचनाओं में होती थी उनकी रचनाओं में उनकी काव्य में जो सबसे ज्यादा भाषा और शैली प्रयोग होता था वह है

- गवेषणात्मक शैली
- व्यंगात्मक शैली
- वर्ण्य विषय
- वर्णनात्मक शैली

हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनायें

हजारी प्रसाद द्विवेदी एक सफल उपन्यासकार, निबंधकार, आलोचना कार, थे उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था और द्विवेदी जी का स्वभाव उदार और सरल था

उन्होंने बहुत सारी रचनाएं की जिनमें निबंध आलोचना ललित निबंध उपन्यास कहानियां ग्रंथ संपादन आदि है आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को हिंदी संस्कृत गुजराती पंजाबी पाली आदि भाषाओं का ज्ञान था उनकी पहचान एक निबंधकार के रूप में होता है उनकी प्रमुख रचनाएं है.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का उपन्यास

- बाणभट्ट की आत्मकथा
- चारुचंद्र लेख
- पुनर्नवा
- अनामदास का पोथा

निबंध संग्रह

- मध्यकालीन धर्म साधना
- विचार प्रवाह

- कुटज
- आलोक पर्व

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का निबंध

- अशोक के फूल
- कल्प लता
- विचार और वितर्क
- कुटज
- आलोक पर्व
- गतिशील चिंतन
- नाखून क्यों बढ़ते हैं
- देवदारू
- मेरी जन्मभूमि
- वसंत आ गया
- घर जोड़ने की माया
- वर्षा घनपति से घनश्याम तक

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का आलोचना

- सुर साहित्य
- कबीर
- मध्यकालीन बोध का स्वरूप
- नाथ संप्रदाय
- कालिदास की ललित योजना
- हिंदी साहित्य का आदिकाल
- Hindi साहित्य की भूमिका
- हिंदी साहित्य उद्भव और विकास
- साहित्य का मर्म
- मेघदूत एक पुरानी कहानी
- प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद
- मध्यकालीन बोध का स्वरूप
- मृत्युंजय रविंद्र
- सहज साधना
- साहित्य सहचर
- ललित्य तत्व

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का ग्रंथों का संपादन

- संदेश रासक
- पृथ्वीराज रासो
- नाथ सिद्धो के बनिया

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का कहानियां

- आम फिर बौरा गए
- शिरीष के फूल
- भगवान महाकाल का कुंथानृत्य
- महात्मा के महापरायण के बाद

- ठाकुर जी की बिठूर
- केतु दर्शन
- संस्कृतियों का संगम
- समालोचक की डाक आदि

हजारी प्रसाद द्विवेदी को उनके महान रचनाओं के लिए कई सारे सम्मान और पुरस्कार भी मिले थे उनकी रचनाएं उच्च कोटि की थी इन्हीं सब रचनाओं के लिए उन्हें कुछ पुरस्कार और सम्मान मिले थे जैसे कि

- सोवियत लैंड पुरस्कार,
- पदम भूषण पुरस्कार,
- लखनऊ विश्वविद्यालय से उन्हें डी लिट की उपाधि मिली थी

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने भारतीय हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग छवि बना ली थी उन्होंने अपनी रचनाओं में खड़ी बोली का उपयोग बहुत अच्छे से किया था इसीलिए उन्हें खड़ी बोली का सबसे श्रेष्ठ लेखक माना जाता है उन्होंने अपनी रचनाओं में बहुत सारी शैलीयो का प्रयोग किया था जैसे कि गवेषणाआत्मक शैली, आलोचनात्मक शैली,भावनात्मक शैली,हास्य व्यंग आत्मक शैली, उद्धरण शैली, इत्यादि उन्होंने अपनी रचनाओं में उर्दू फारसी अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं का भी प्रयोग किया है.

निष्कर्ष

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की आलोचना शैली के अनेक रूप मिलते है, विवेचनापूर्ण व्याख्यात्मक शैली में उन्होंने जो आलोचनाएँ लिखी है, उनमे विषय-प्रतिपादन के लिए उद्दरण दिए है, अपने गहन अध्ययन द्वारा विषय का समर्थन करने के लिए उदाहरण प्रस्तुत किये है, उआकी आलोचना शैली का दूसरा रूप भावात्मक है, जिससे किसी कवि की विशेषताओं की प्रशंसा की है, मध्ययुगीन साहित्य और संस्कृति हजारी प्रसाद द्विवेदी जीका क्षेत्र है, उन्होंने सांस्कृतिक गतिविधि, लोक-जीवन आदि के बीच से साहित्य का परिक्षण करने की जिस वैज्ञानिक पद्दति को जन्म दिया है, उसके लिए हिंदी-समीक्षा उनकी चिर-ऋणी रहेगी, एक आलोचन ने ठीक ही लिखा है, कि ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक समीक्षा-पद्दति का आदर्श रूप हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की आलोचनाओं में प्रस्फुटित हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी (विनिबन्ध), विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, पुनर्मुद्रित संस्करण-2016, पृष्ठ-7.
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी (विनिबन्ध), पूर्ववत्, पृ०-10.
3. व्योमकेश दरवेश, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2012, पृष्ठ-35.
4. हजारीप्रसाद द्विवेदी (विनिबन्ध), पूर्ववत्, पृ०-11.
5. व्योमकेश दरवेश, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2012, पृष्ठ-135.
6. दूसरी परम्परा की खोज, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-1994, पृष्ठ-27.
7. हजारीप्रसाद द्विवेदी (विनिबन्ध), पूर्ववत्, पृ०-15-16.
8. हजारीप्रसाद द्विवेदी (विनिबन्ध), पूर्ववत्, पृ०-16.
9. हजारीप्रसाद द्विवेदी (विनिबन्ध), पूर्ववत्, पृ०-16-17.
10. दूसरी परम्परा की खोज, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-1994, पृष्ठ-33.
11. व्योमकेश दरवेश, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2012, पृष्ठ-333.
12. हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली, खण्ड-1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पेपरबैक संस्करण-2007, पृष्ठ-7-8 (नये संस्करण की भूमिका)।